लेवी स्ट्रॉस

लेवी स्ट्रॉस फ्रेंच मानव शास्त्रीय विचारधारा से संबंधित हैं. वह " संरचनावाद" के जनक माने जाते हैं. उनका जन्म 1908 में बेलजियम में हुआ था. वह कानून के विद्यार्थी थे. बाद में उनका रुझान मानवशास्त्र की तरफ हो गया. उनके सिद्धांतों में रूसो, दुर्खीम तथा मार्शलमाँस का प्रभाव दिखता हैं. उनकी कुछ प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं....

The elementary structure of kinship(1949)

Structural anthropology(1963)

Totemism(1963)

Savage mind(1966)

Mythologiques 4 volums(1964_1972)

Raw and cooked(1969)

लेबी स्ट्रॉस के संरचनावाद का आधार मनुष्य की अचेतन विचार प्रणाली है.उनका मानना था कि संस्कृति के अध्ययन में मनुष्य की विचार प्रक्रिया को समझना आवश्यक है. उनकी यह विचारधारा भाषा विज्ञान की अवधारणा पर आधारित थी. इस अवधारणा के अनुसार विश्व की सभी भाषाओं की संरचना अलग अलग है किंतु उनका आधार मानसिक विचार प्रक्रिया है.उनके अनुसार भाषा और संस्कृति दो तत्वों के आधार पर ही मनुष्य दूसरे सभी जानवरों से भिन्न है. भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है . भाषा की तरह जहां कहीं भी मनुष्य है वहां संस्कृति भी है. जैसे भाषा में भिन्नता पाई जाती हैं उसी प्रकार संस्कृति में भी भिन्नता पाई जाती है. भाषा की संरचना का अध्ययन मनुष्य की अचेतन विचार प्रक्रिया के द्वारा किया जा सकता है, उसी प्रकार संस्कृति का अध्ययन अचेतन विचार प्रक्रिया के द्वारा संभव है.

संरचनावाद को विश्लेषण करने के लिए स्ट्रॉस ने "दोहरे प्रतिरोध" की चर्चा की थी. उनके अनुसार पूरी दुनिया में मनुष्य किसी भी घटना या वस्तु को दो विपरीत नजरिए से देखते हैं जैसे रात -दिन, ठंडा- गरम जीवन- मृत्यु इत्यादि. स्ट्रॉस ने इसे सार्वभौमिक माना है. हर संस्कृति में लोगों की विचार पद्धति दोहरे प्रतिरोध से प्रभावित होती है इसलिए हर संस्कृति अलग होती है.

अपनी पुस्तक "Elementary structure of kinship" में उन्होंने नातेदारी व्यवस्था के विश्लेषण द्वारा संरचनावाद को समझाने का प्रयास किया है. उन्होंने विवाह संबंधों को आधार बनाकर नातेदारी व्यवस्था का अध्ययन किया तथा इसके द्वारा सामाजिक संरचना को समझने का प्रयास किया. अपने अध्ययन में स्ट्रॉस ने नारी विनिमय पर ध्यान केंद्रित करते हुए नारी विनिमय को सामाजिक संबंधों को विकसित करने की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा है. जिन समूहों के बीच नारी विनिमय होता है उन समूहों के बीच आपसी संबंध विकसित हो जाते हैं साथ ही यह समूह नारी के साथ भी संबंध रखते हैं. यह संबंध समूहों के बीच मध्यस्थता स्थापित करने में सहायक होते हैं. लेवी स्ट्रॉस के अनुसार नारी विनिमय के दो प्रकार होते हैं....

1. सीमित विनिमय-- इसमें किसी दो समूहों के बीच नारी का विनिमय होता है. सामान्य तौर पर दो नातेदार समूहों के बीच विलिंग सहोदरज विवाह के द्वारा संबंध का निर्माण होता है. इसमें एक समूह के भाई बहन विलिंग सहोदरज भाई बहनों के साथ वैवाहिक संबंध बनाते हैं . यह विनिमय प्रत्यक्ष होता है.

2. सामान्य विनिमय: इसमें दो या दो से अधिक नातेदार के बीच विलिंग सहोदरज विवाह के द्वारा संबंध स्थापित किए जाते हैं. इस प्रकार का विनिमय सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ करता है.

नातेदारी के अतिरिक्त लेवी स्ट्रॉस ने मिथकों को का भी अध्ययन किया था. विभिन्न समाजों में प्रचलित लोक प्रिय मिथकों , के विश्लेषण के आधार पर स्ट्रॉस ने आदिम मानव के सोचने समझने के ढंग समझाते हुए यह बतलाया की भाषा विज्ञान के संरचनात्मक उपागम द्वारा मिथकों का विश्लेषण संभव है. अपनी पुस्तक "सैवेज माइंड" में उन्होंने आदिमानव के सोचने के तरीकों पर चर्चा की है

और अपने विश्लेषण से वह इस नतीजे पर पहुंचे हैं की आदिम समुदाय में भी सोचने समझने की प्रक्रिया आधुनिक समुदायों के जैसी ही थी. आधुनिक समय में उनके द्वारा दिए गए ज्ञान को विश्लेषित कर हमने आधुनिक प्रणाली बनाई हैं. वस्तुतः आधुनिक मानव की सोच का आधार आदिम मानव के विचार हैं. इन्हीं विचारों ने हमें एक ऐसी विचार पद्धति प्रदान की जिसे हमने अपने अनुभव एवं आवश्यकताों के आधार पर और विकसित कर लिया. अतः आदिम मानव और आधुनिक मानव के सोचने समझने की प्रक्रिया समान हैं. इसी क्रम में उन्होंने पूरी दुनिया में जनजातीय समाज में प्रचलित टोटम वाद का अध्ययन किया था. टोटम से संबंधित वास्तविक एवं काल्पनिक वस्तुओं का अध्ययन कर उन्होंने यह बतलाया कि इसके द्वारा मनुष्य के विश्वास प्रणाली से संबंधित सामान्य नियम निकाले जा सकते हैं. टोटम में पशुओं, पेड़ पौधों तथा प्राणी जगत और वनस्पति जगत के आपसी संबंध का वर्णन मिलता है. इस संबंध को समझ कर विश्वास प्रणाली के सामान्य नियम समझे जा सकते हैं.

अपनी पुस्तक Raw and cooked में इन्होंने भोजन की संरचना का विश्लेषण किया है. भोजन में प्रचलित कच्चा एवं पक्का खाना को इन्होंने दोहरे प्रतिरोध के रूप में व्यक्त किया है. इनके अनुसार उबला हुआ खाना नातेदारों को दिया जाता है.. पक्का खाना जिसे सेंककर या तलकर बनाया जाता है वह अन्य लोगों को दिया जाता है. इस प्रकार विभिन्न मानवीय समूहों में संबंध बनाने के लिए भोजन मध्यस्थ का काम करता है.